॥ अन्नपूर्णा स्तोत्रम् ॥

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्य रत्नाकरी
निर्धूताखिल घोर पावनकरी प्रत्यक्ष माहेश्वरी ।
प्रालेयाचल वंश पावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥१॥

नानारत्न विचित्र भूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहार विलम्बमान विलसत् वक्षोजकुम्भान्तरी
काश्मीरागरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥२॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थ निष्ठाकरी
चन्द्रार्कानल भासमानलहरी त्रैलोक्य रक्षाकरी
सर्वैश्वर्य समस्त वाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥३॥

कैलासाचल कन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी
कौमारी निगमार्थ गोचरकरी ओंकार बीजाक्षरी
मोक्षद्वार कपाट पाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥४॥

दृश्यादृश्य विभूति वाहनकरी ब्रह्माण्ड भाण्डोदरी
लीलानाटक सूत्र भेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी
श्री विश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥५॥

उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणीनील समान कुन्तलधरी नित्यान्नदानेश्वरी

सर्वानन्दकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥६॥

आदिक्षान्त समस्त वर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी
कामाकाङ्क्षरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥७॥

देवी सर्व विचित्र रत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामे स्वादुपयोधरा प्रियकरी सौभाग्य माहेश्वरी
भक्ताभीष्टकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥८॥

चन्द्रार्कानल कोटि कोटि सदृशा चन्द्रांशु बिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्नि समान कुण्डलधरी चन्द्रार्क वर्णेश्वरी
माला पुस्तक पाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥९॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माता अन्नपूर्णेश्वरी ॥१०॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे
ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वती ॥११॥

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः
बान्धवाः शिव भक्तश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥१२॥